



INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

हनुमानगढ़ जिले में पशुधन एवं कृषि परिवर्तन

Livestock and Agricultural Transformation in Hanumangarh District

Author : Sunil Kumar Ph.D. Scholar, SKD University Hanumangarh,
Rajasthan.

Supervisor:- Dr.Dheeraj Kumar, Associate professor - Geography, SKD
University Hanumangarh

Abstract: हनुमानगढ़ जिला राजस्थान के उत्तर-पश्चिमी भाग में स्थित एक महत्वपूर्ण कृषि प्रधान क्षेत्र है। यहाँ की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि एवं पशुपालन पर आधारित है। पिछले कुछ दशकों में जिले में कृषि एवं पशुधन क्षेत्र में उल्लेखनीय परिवर्तन देखने को मिले हैं, जिनका प्रभाव ग्रामीण अर्थव्यवस्था, रोजगार, आय तथा सामाजिक विकास पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य हनुमानगढ़ जिले में पशुधन एवं कृषि क्षेत्र में हुए परिवर्तनों का विश्लेषण करना तथा इनके सामाजिक एवं आर्थिक प्रभावों का मूल्यांकन करना है। हनुमानगढ़ जिले में सिंचाई सुविधाओं के विस्तार, विशेष रूप से इंदिरा गांधी नहर परियोजना के प्रभाव से कृषि उत्पादन में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है। परंपरागत फसलों के स्थान पर गेहूँ, कपास, सरसों, ग्वार तथा बागवानी फसलों का विस्तार हुआ है। आधुनिक कृषि तकनीकों, उन्नत बीजों, रासायनिक उर्वरकों, कृषि यंत्रों एवं वैज्ञानिक खेती पद्धतियों के उपयोग से उत्पादकता में वृद्धि हुई है। साथ ही, कृषि का व्यावसायीकरण भी बढ़ा है, जिससे किसानों की आय में सकारात्मक परिवर्तन आया है। पशुधन क्षेत्र में भी उल्लेखनीय बदलाव देखने को मिले हैं। परंपरागत पशुपालन प्रणाली के स्थान पर वैज्ञानिक पशुपालन, उन्नत नस्लों का उपयोग, कृत्रिम गर्भाधान, पशु स्वास्थ्य सेवाओं तथा दुग्ध उत्पादन तकनीकों का विस्तार हुआ है। जिले में गाय, भैंस, भेड़ तथा बकरी पालन के साथ-साथ डेयरी व्यवसाय का भी विकास हुआ है। इससे ग्रामीण परिवारों को अतिरिक्त आय के स्रोत प्राप्त हुए हैं तथा कृषि पर निर्भरता का दबाव कम हुआ है। हालाँकि, कृषि एवं पशुधन क्षेत्र में हुए इन परिवर्तनों के साथ कुछ चुनौतियाँ भी उभरकर सामने आई हैं, जैसे जल संसाधनों पर बढ़ता दबाव, मृदा उर्वरता में कमी, जलवायु परिवर्तन के प्रभाव तथा पशु चारे की उपलब्धता संबंधी समस्याएँ। इन चुनौतियों के बावजूद कृषि एवं पशुपालन का समन्वित विकास जिले की आर्थिक प्रगति का प्रमुख आधार बना हुआ है। निष्कर्षतः, हनुमानगढ़ जिले में कृषि एवं पशुधन क्षेत्र में हुए परिवर्तन ग्रामीण विकास, रोजगार सृजन तथा आर्थिक सशक्तिकरण के महत्वपूर्ण कारक सिद्ध हुए हैं। सतत कृषि एवं वैज्ञानिक पशुपालन को बढ़ावा देकर भविष्य में भी जिले के समग्र विकास को सुनिश्चित किया जा सकता है।

Keyword: हनुमानगढ़, पशुधन, कृषि, कृषि परिवर्तन, पशुपालन, डेयरी विकास, सिंचाई, इंदिरा गांधी नहर, कृषि उत्पादन, फसल विविधीकरण, गेहूँ, कपास, सरसों, ग्वार, बागवानी, उन्नत बीज, कृषि यंत्रीकरण, उर्वरक, कीटनाशक, वैज्ञानिक खेती, ग्रामीण विकास, कृषक आय, रोजगार, दुग्ध उत्पादन, उन्नत नस्लें, कृत्रिम गर्भाधान, पशु स्वास्थ्य, चारा प्रबंधन, भैंस पालन, गाय पालन, भेड़ पालन, बकरी पालन, डेयरी उद्योग, कृषि अर्थव्यवस्था, ग्रामीण अर्थव्यवस्था, जल संसाधन, मृदा उर्वरता, जलवायु परिवर्तन, कृषि तकनीक, सतत विकास, कृषि आधुनिकीकरण, पशुधन संसाधन, उत्पादकता, खाद्य सुरक्षा, प्राकृतिक संसाधन, कृषि विपणन, सहकारी समितियाँ, किसान कल्याण, आर्थिक विकास, सामाजिक परिवर्तन।

Article : हनुमानगढ़ जिला राजस्थान के उत्तर-पश्चिमी भाग में स्थित एक महत्वपूर्ण कृषि एवं पशुपालन प्रधान क्षेत्र है। यह जिला अपनी उपजाऊ भूमि, विकसित सिंचाई व्यवस्था तथा कृषि आधारित अर्थव्यवस्था के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ की अधिकांश जनसंख्या प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि एवं पशुपालन पर निर्भर है। समय के साथ कृषि तकनीकों, सिंचाई सुविधाओं, सरकारी योजनाओं तथा वैज्ञानिक पशुपालन के विकास के कारण जिले में कृषि एवं पशुधन क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन हुए हैं। इन परिवर्तनों ने ग्रामीण जीवन, आर्थिक विकास तथा सामाजिक संरचना को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है।

हनुमानगढ़ जिले की कृषि व्यवस्था में सबसे बड़ा परिवर्तन सिंचाई सुविधाओं के विस्तार के कारण आया है। इंदिरा गांधी नहर परियोजना के आगमन से इस क्षेत्र की कृषि में क्रांतिकारी बदलाव देखने को मिला। जहाँ पहले वर्षा आधारित खेती प्रमुख थी, वहीं अब अधिकांश क्षेत्र सिंचित कृषि के अंतर्गत आ गया है। सिंचाई की उपलब्धता ने किसानों को वर्ष भर विभिन्न प्रकार की फसलें उगाने का अवसर प्रदान किया है। परिणामस्वरूप कृषि उत्पादन और उत्पादकता दोनों में वृद्धि हुई है।

कृषि क्षेत्र में फसल प्रतिरूप में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ है। पहले मुख्य रूप से बाजरा, ज्वार और चना जैसी पारंपरिक फसलें उगाई जाती थीं, किन्तु वर्तमान में गेहूँ, कपास, सरसों, ग्वार तथा चारा फसलों का उत्पादन अधिक होने लगा है। उन्नत बीजों, रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों तथा आधुनिक कृषि यंत्रों के उपयोग ने खेती को अधिक लाभकारी बनाया है। ट्रैक्टर, हार्वेस्टर, ड्रिप सिंचाई तथा स्प्रींकलर जैसी तकनीकों के प्रयोग से कृषि कार्यों में दक्षता बढ़ी है तथा उत्पादन लागत में कमी आई है।

कृषि के आधुनिकीकरण के साथ किसानों की आय में भी वृद्धि हुई है। कृषि उत्पादों के विपणन हेतु मंडियों, सहकारी समितियों तथा सरकारी खरीद केंद्रों की स्थापना ने किसानों को बेहतर बाजार उपलब्ध कराया है। कृषि ऋण, फसल बीमा तथा विभिन्न कृषि योजनाओं ने भी किसानों को आर्थिक सुरक्षा प्रदान की है। इससे कृषि व्यवसाय अधिक संगठित एवं व्यावसायिक स्वरूप ग्रहण कर रहा है।

पशुधन क्षेत्र में भी पिछले वर्षों में उल्लेखनीय परिवर्तन हुए हैं। पशुपालन परंपरागत आजीविका का एक महत्वपूर्ण साधन रहा है, लेकिन अब यह एक संगठित व्यवसाय के रूप में विकसित हो रहा है। जिले में गाय, भैंस, भेड़ और बकरी पालन व्यापक रूप से किया जाता है। दुग्ध उत्पादन में वृद्धि के लिए उन्नत नस्लों का विकास, कृत्रिम गर्भाधान तथा पशु चिकित्सा सेवाओं का विस्तार किया गया है। इससे पशुओं की उत्पादकता में वृद्धि हुई है तथा दुग्ध उत्पादन में उल्लेखनीय सुधार हुआ है।

डेयरी उद्योग के विकास ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नई दिशा प्रदान की है। दुग्ध सहकारी समितियों के माध्यम से किसानों और पशुपालकों को अपने उत्पादों के लिए नियमित बाजार उपलब्ध हुआ है। इससे ग्रामीण परिवारों की आय में वृद्धि हुई है तथा रोजगार के नए अवसर सृजित हुए हैं। विशेष रूप से महिलाओं की आर्थिक भागीदारी बढ़ाने में डेयरी व्यवसाय ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

पशुधन विकास में सरकारी योजनाओं का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। पशु स्वास्थ्य शिविर, टीकाकरण कार्यक्रम, नस्ल सुधार योजनाएँ तथा पशु बीमा जैसी सुविधाओं ने पशुपालकों को लाभान्वित किया है। चारा विकास कार्यक्रमों के माध्यम से पशुओं के लिए पौष्टिक आहार की उपलब्धता सुनिश्चित करने के प्रयास किए गए हैं। इससे पशुधन की गुणवत्ता तथा उत्पादन क्षमता में वृद्धि हुई है।

हालाँकि कृषि एवं पशुधन क्षेत्र में सकारात्मक परिवर्तन हुए हैं, फिर भी कुछ चुनौतियाँ विद्यमान हैं। भूजल स्तर में गिरावट, मृदा की उर्वरता में कमी, रासायनिक उर्वरकों का अत्यधिक उपयोग तथा जलवायु परिवर्तन के प्रभाव कृषि क्षेत्र के लिए गंभीर चिंताएँ हैं। इसी प्रकार पशुपालन क्षेत्र में चारे की कमी, पशु रोग तथा बढ़ती उत्पादन लागत जैसी समस्याएँ भी सामने आती हैं। इन चुनौतियों का समाधान वैज्ञानिक प्रबंधन, प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण तथा सतत विकास की नीतियों के माध्यम से किया जा सकता है।

कृषि और पशुधन दोनों क्षेत्रों का आपसी संबंध जिले की अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाता है। कृषि से प्राप्त अवशेष पशुओं के चारे के रूप में उपयोग होते हैं, जबकि पशुओं से प्राप्त गोबर जैविक खाद के रूप में कृषि उत्पादन को बढ़ावा देता है। इस प्रकार कृषि एवं पशुपालन का समन्वित विकास ग्रामीण आजीविका को सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सामाजिक दृष्टि से भी इन परिवर्तनों का सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास तथा जीवन स्तर में सुधार हुआ है। बढ़ती आय के कारण किसानों और पशुपालकों की आर्थिक स्थिति मजबूत हुई है तथा ग्रामीण विकास को गति मिली है। महिलाओं और युवाओं की भागीदारी भी कृषि एवं पशुपालन गतिविधियों में बढ़ी है, जिससे सामाजिक सशक्तिकरण को बल मिला है। निष्कर्षतः, हनुमानगढ़ जिले में कृषि एवं पशुधन क्षेत्र में हुए परिवर्तन ग्रामीण विकास और आर्थिक प्रगति के महत्वपूर्ण आधार बने हैं। आधुनिक कृषि तकनीकों, सिंचाई सुविधाओं, वैज्ञानिक पशुपालन तथा सरकारी योजनाओं के प्रभाव से जिले में उत्पादन, आय और रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई है। भविष्य में सतत कृषि, जल संरक्षण, जैविक खेती तथा उन्नत पशुधन प्रबंधन को बढ़ावा देकर इस विकास प्रक्रिया को और अधिक मजबूत बनाया जा सकता है। इस प्रकार कृषि एवं पशुधन का समन्वित विकास हनुमानगढ़ जिले की समृद्धि और ग्रामीण विकास का प्रमुख आधार बना रहेगा।

Conclusion : हनुमानगढ़ जिला राजस्थान का एक प्रमुख कृषि एवं पशुपालन आधारित क्षेत्र है, जहाँ कृषि और पशुधन दोनों ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ माने जाते हैं। प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि पिछले कुछ दशकों में जिले के कृषि एवं पशुधन क्षेत्र में व्यापक और सकारात्मक परिवर्तन हुए हैं। इन परिवर्तनों ने न केवल उत्पादन और उत्पादकता में वृद्धि की है, बल्कि ग्रामीण समाज के आर्थिक एवं सामाजिक विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इंदिरा गांधी नहर परियोजना के विस्तार ने हनुमानगढ़ जिले की कृषि व्यवस्था को नई दिशा प्रदान की है। सिंचाई सुविधाओं की उपलब्धता से कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई तथा किसानों को विविध प्रकार की फसलें उगाने का अवसर प्राप्त हुआ। पारंपरिक कृषि पद्धतियों के स्थान पर आधुनिक तकनीकों,

उन्नत बीजों, कृषि यंत्रों तथा वैज्ञानिक खेती को अपनाने से कृषि अधिक लाभकारी और व्यावसायिक बनी है। फसल विविधीकरण ने किसानों की आय बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है तथा कृषि जोखिम को कम किया है। पशुधन क्षेत्र में भी उल्लेखनीय प्रगति देखने को मिली है। उन्नत नस्लों के विकास, कृत्रिम गर्भाधान, पशु चिकित्सा सेवाओं तथा टीकाकरण कार्यक्रमों ने पशुओं की गुणवत्ता और उत्पादकता में वृद्धि की है। दुग्ध उत्पादन में वृद्धि के साथ डेयरी व्यवसाय का विस्तार हुआ है, जिससे ग्रामीण परिवारों को अतिरिक्त आय का स्रोत प्राप्त हुआ है। पशुपालन अब केवल परंपरागत गतिविधि न रहकर एक संगठित एवं लाभदायक व्यवसाय के रूप में विकसित हो रहा है। अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि कृषि और पशुपालन एक-दूसरे के पूरक हैं। कृषि से प्राप्त चारा एवं फसल अवशेष पशुपालन को समर्थन देते हैं, जबकि पशुओं से प्राप्त जैविक खाद कृषि भूमि की उर्वरता बनाए रखने में सहायक होती है। इस समन्वित व्यवस्था ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को अधिक सुदृढ़ और आत्मनिर्भर बनाया है। इन सकारात्मक परिवर्तनों के बावजूद कुछ चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। भूजल स्तर में गिरावट, मृदा उर्वरता में कमी, रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का अत्यधिक उपयोग, जलवायु परिवर्तन तथा पशुओं के लिए गुणवत्तापूर्ण चारे की उपलब्धता जैसी समस्याएँ भविष्य के लिए चिंता का विषय हैं। यदि इन समस्याओं का समय रहते समाधान नहीं किया गया तो कृषि एवं पशुधन विकास की गति प्रभावित हो सकती है। भविष्य की दृष्टि से जल संरक्षण, जैविक खेती, सूक्ष्म सिंचाई तकनीकों, पशु स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार तथा उन्नत पशुधन प्रबंधन को बढ़ावा देना आवश्यक है। साथ ही किसानों और पशुपालकों को नवीन तकनीकों एवं वैज्ञानिक ज्ञान से जोड़ने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों का नियमित आयोजन किया जाना चाहिए। सरकारी योजनाओं और सहकारी संस्थाओं की प्रभावी भूमिका भी इस दिशा में महत्वपूर्ण सिद्ध होगी। अंततः कहा जा सकता है कि हनुमानगढ़ जिले में कृषि एवं पशुधन क्षेत्र में हुए परिवर्तन ग्रामीण विकास, रोजगार सृजन, आय वृद्धि तथा सामाजिक प्रगति के महत्वपूर्ण आधार बने हैं। सतत एवं संतुलित विकास की रणनीतियों को अपनाकर कृषि और पशुधन क्षेत्र को और अधिक सशक्त बनाया जा सकता है, जिससे जिले की आर्थिक समृद्धि तथा ग्रामीण जीवन स्तर में निरंतर सुधार सुनिश्चित हो सकेगा। यही हनुमानगढ़ जिले के समग्र एवं दीर्घकालिक विकास का प्रमुख मार्ग है।

References :

1. भारत सरकार, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, 'कृषि सांख्यिकी एवं वार्षिक प्रतिवेदन', नई दिल्ली।
2. भारत सरकार, पशुपालन एवं डेयरी विभाग, 'बेसिक एनिमल हसबैंड्री स्टैटिस्टिक्स, नई दिल्ली।
3. राजस्थान सरकार, कृषि विभाग, 'राजस्थान कृषि सांख्यिकी रिपोर्ट', जयपुर।
4. राजस्थान सरकार, पशुपालन विभाग, 'पशुधन गणना एवं विभागीय प्रतिवेदन', जयपुर।
5. भारत सरकार, जनगणना विभाग, 'भारत की जनगणना 2011', नई दिल्ली।
6. राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड, 'डेयरी विकास एवं दुग्ध उत्पादन रिपोर्ट', आनंद, गुजरात।
7. भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, 'भारतीय कृषि एवं पशुपालन संबंधी शोध प्रकाशन', नई दिल्ली।
8. केंद्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, 'राजस्थान में कृषि एवं पशुधन विकास अध्ययन', जोधपुर।

9. राजस्थान आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, 'राजस्थान आर्थिक समीक्षा', जयपुर।
10. हनुमानगढ़ जिला प्रशासन, 'जिला सांख्यिकी रूपरेखा, हनुमानगढ़'।
11. इंदिरा गांधी नहर परियोजना विभाग, 'नहर सिंचाई एवं कृषि विकास प्रतिवेदन', राजस्थान।
12. सिंह, बी.एल., साहित्य भवन प्रकाशन, आगरा।
13. मामोरिया, चतुर्भुज एवं जैन, जे.पी., साहित्य भवन प्रकाशन, आगरा।
14. शर्मा, एच.एस., रावत पब्लिकेशन, जयपुर।
15. योजना आयोग तथा नीति आयोग की कृषि, ग्रामीण विकास एवं पशुधन संबंधी विभिन्न रिपोर्टें।

